ईश्वर की बुलाहट कभी उनके वचन के विरुद्ध नहीं होती

प्रभु यीशु की स्तुति हो, मेरे प्रिय भाई। आइए हम कुछ जीवन बदल देने वाले सत्य पर मिलकर ध्यान दें।

जब हम बाइबल पढ़ते हैं, तो हम ईश्वर की प्रकटि प्राप्त करते हैं (2 तीमुथियुस 3:16)। जो कोई भी बिना उसका वचन ध्यान से पढ़े, जल्दबाजी में ईश्वर की सेवा में कूदता है, वह अपने लिए बड़ा जोखिम पैदा करता है। ईश्वर का वचन हमारी अंतिम प्राधिकारी है, और हर दृष्टि, बुलाहट या अनुभव को इसके अनुसार परखा जाना चाहिए (1 यूहन्ना 4:1)।

यह वैसा ही है जैसे बिना किसी शोध के व्यापार में कूद जाना — बिना यह जाने कि इसमें कौन-कौन सी चुनौतियाँ, लाभ और जोखिम हैं।

आज हम देखेंगे कि ईश्वर के आदेशों की अनदेखी कैसे असफलता और यहां तक कि मृत्यु तक ले जा सकती है।

1. मूसा का उदाहरण

ईश्वर ने मूसा को जली हुई झाड़ी के माध्यम से बुलाया (निर्गमन 3), और उसे मिस्र से इस्राएल को मुक्त करने के लिए भेजा। फिर भी, रास्ते में ईश्वर मूसा को मारने ही वाले थे (निर्गमन 4:24-26):

“रास्ते में रुकते समय यहोवा मूसा से मिलने आया और उसे
मारने ही वाला था। तब ज़िप्पोरा ने एक आरी उठाई, अपने बेटे
का ख़तना किया और मूसा के पैरों को छूते हुए कहा, ‘तुम
निश्चित ही मेरे लिए खून के वर हो।’”

क्यों? क्योंकि मूसा ने विरासत के चिन्ह—ख़तना (उत्पत्ति 17:9-14) का पालन नहीं किया था। यह चिन्ह ईश्वर और उनके लोगों के बीच किए गए संधि (कॉन्ट्रैक्ट) का अनिवार्य प्रतीक था।

यह हमें याद दिलाता है कि कोई भी आध्यात्मिक बुलाहट हमें ईश्वर के आदेशों का पालन करने से मुक्त नहीं करती।

आज भी कई लोग बाइबल के आदेशों, जैसे जल बपतिस्मा (मत्ती 28:19), को नजरअंदाज कर कहते हैं कि सीधे ईश्वर से प्रकटि मिलना पर्याप्त है। लेकिन यीशु ने बपतिस्मा को शिष्यत्व का चिन्ह बताया है, और इसे छोड़ देना उनके वचन की अवहेलना है (मरकुस 16:16)।

2. बलआम का उदाहरण

बलआम एक भविष्यवक्ता था, जिसे ईश्वर ने स्पष्ट रूप से आज्ञा दी थी कि वह इस्राएल को शाप न दे (गिनती 22:12):

“उनके साथ मत जाना, उन लोगों को शाप न देना; क्योंकि वे आशीष
पाए हुए हैं।”

फिर भी, बलाक के प्रलोभन में आकर बलआम ने ईश्वर की सीधी आज्ञा की अवहेलना की। रास्ते में ईश्वर का देवदूत उसे मारने के लिए तैयार था (गिनती 22:22)। उसकी अवज्ञा लगभग उसकी मृत्यु का कारण बन गई।

यह दिखाता है कि भविष्यवक्ताओं को भी ईश्वर के वचन का पालन करना अनिवार्य है। व्यक्तिगत दृष्टियाँ या इच्छाएँ ईश्वर के स्पष्ट आदेशों से ऊपर नहीं हो सकतीं। ऐसा करना विनाश की ओर ले जाता है (नीतिवचन 14:12)।

3. सिद्धांत: ईश्वर का वचन सर्वोपरि है

प्रेरित पॉल हमें सिखाते हैं कि हमें “आत्माओं का परीक्षण करना चाहिए कि वे ईश्वर से हैं या नहीं” (1 यूहन्ना 4:1)। कोई भी दृष्टि या बुलाहट कितनी भी शक्तिशाली क्यों न लगे, वह शास्त्र के विरुद्ध नहीं हो सकती।

उदाहरण के लिए, पॉल लिखते हैं:

“मैं किसी स्त्री को यह न करने देता कि वह पुरुष पर शिक्षा
दे या उसका अधिकार ले; वह चुप रहे।” (1 तीमुथियुस 2:12)

फिर भी कुछ लोग महिला पादरी या अधीक्षक बनने के लिए ईश्वरीय बुलाहट का दावा करते हैं, और इस स्पष्ट आदेश की अवहेलना करते हैं। ऐसे दावों को शास्त्र के अनुसार सावधानीपूर्वक परखा जाना चाहिए।

कई लोग दृष्टियाँ और बुलाहट प्राप्त करते हैं, लेकिन उन्हें पूरा नहीं कर पाते क्योंकि वे ईश्वर के वचन की अनदेखी करते हैं। हमारा जीवन और सेवा बाइबल में जड़े होना चाहिए, न कि सपनों, आवाजों या व्यक्तिगत प्रकटियों में।

आइए हम पहले ईश्वर के वचन का पालन करें, और फिर अन्य सब बातें अपने आप आएँगी (भजन संहिता 119:105)।

प्रभु आपको भरपूर आशीष दें।

[illegible], [illegible]

[illegible]?

Share on:
WhatsApp

Print this post